ओ३म्

‘वेद एवं वैदिक साहित्य का महत्व’

—मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

वेद एक ष ाब्द हैं यह संस्कृत भाशा का ष ाब्द हैं इसका अर्थ ज्ञान व जानना होता हैं संसार में वेद नाम से चार ग्रन्थ उपलब्ध होते हैं जिनके नाम हैं ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेदं हम देखते हैं कि संसार में सभी पुस्तकों के एक या एक से अधिक लेखक व संकलनकर्ता होते हैं अब प्रष न उपस्थित होता है कि इन चार वेदों के लेखक व संकलनकर्ता कौन हैं? सामान्यतः वेदों के विशय में कुछ भी न जानने वालों स्वदेष ी व विदेष ी विद्वानों द्वारा पक्षपातपूर्वक यह कह दिया जाता है कि ऋशियों ने वेदों की रचना की हैं इसका अर्थ होता कि कुछ ऋशियों ने वेदों का संकलन किया हैं यह बात सभी स्वीकार करते हैं कि वेद संसार के सबसे प्राचीन ग्रन्थ हैं वेदों का यदि किसी एक या अधिक ऋशियों ने लेखन व संकलन किया है तो प्रष न होता है कि उन ऋशियों को वेदों में निहित ज्ञान की प्राप्ति कहा से हुई होगी? उनको वेदों के ज्ञान की प्राप्ति का स्रोत वैसे तो किसी को ज्ञात नहीं है, यदि मान भी लें तो फिर वही प्रष न उपस्थित होता है कि जिन स्रोतों से ऋशियों को ज्ञान मिला, यदि वह मनुश्य व ऋशि थे तो उन्होंने चार वेदों का ज्ञान कब, कहां व किससे प्राप्त किया था? इन प्रष नों के उत्तर संसार में किसी को पता नहीं हैं अतः इन प्रष नों के उत्तर प्राचीन वैदिक साहित्य ब्राह्मण ग्रन्थ, मनुस्मृति आदि जो सृश्टि के आरम्भ काल में ही रचे गये अर्थात् वेदों की उत्पत्ति के बाद ऋशियों ने संकलित किये व रचे, उनसे पता करना होगा और वही जानकारी इस विशय की प्रामाणिक जानकारी हो सकती हैं वेदों के बाद जिस ग्रन्थ की रचना हुई उनका नाम ब्राह्मण ग्रन्थ हैं ब्राह्मण ग्रन्थों में चार वेदों के चार ब्राह्मण है जिनमें यजुर्वेद का ब्राह्मण ष ातपथ ब्राह्मण कहलाता हैं इसमें लिखा है **‘अग्नेर्वा ऋग्वेदो जायते वायोर्यजुवेदः सूर्यातसामवेदः ’** इसका हिन्दी भाशा में अर्थ है कि **प्रथम सृश्टि की आदि में परमात्मा ने अग्नि, वायु, आदित्य तथा अंगिरा ऋशियों की आत्मा में एक–एक वेद का प्रकाष ा कियां** मनुस्मृति भी सृश्टि की आदि उत्पन्न हुईं इसमें लिखा है कि परमात्मा ने आदि सृश्टि में मनुश्यों को उत्पन्न करके अग्नि आदि चारों महर्शियों के द्वारा चारों वेद ब्रह्मा को प्राप्त कराये और उस ब्रह्मा ने अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा से ऋग् यजुः साम और अथर्ववेद का ग्रहण कियां मनुस्मृति में इस आष ाय का ष लोक वा प्रमाण है **‘‘अग्निवायुरविभ्यस्तु त्रयं ब्रह्म सनातनम् दुदोह यज्ञसिद्ध्यर्थमृग्यजुःसामलक्षणम् ’’** इन प्रमाणों से पुश्टि हो जाती है कि इस सृश्टि के रचयिता परमात्मा ने आदि चार ऋशियों अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा को क्रमष ाः ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद का ज्ञान कराया और इन चार ऋशियों ने इन चारों वेदों का ज्ञान ब्रह्मा ऋशि को करायां इससे चारों वेद ईष वर द्वारा सृश्टि के आरम्भ काल में दिया गया ज्ञान सिद्ध हो जाता हैं

वेद परमात्मा से ही उत्पन्न हुए हैं इसकी साक्षी वेदों के अनेक मंत्र देते हैं अथर्ववेद का 10/23/4/20 मन्त्र निम्न हैः

यस्मादृचो अपातक्षन् यजुर्यस्मादपाकशन्
समानि यस्य लोमान्यथर्वांगिरसो मुखं स्कम्भन्तं ब्रूहि कतमः स्विदेव सः ं

यजुर्वेद 40/8 मन्त्र का एक भाग है **'स्वयम्भर्याथातथ्यतोऽर्थान् व्यदधाच्छाष वतीभयः समाभयं ं '**

इन मंत्रों में कहा गया है कि जिस परमात्मा से ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद प्रकाषि ात हुए हैं वह कौन सा देव है? इसका उत्तर दिया है कि जो सब को उत्पन्न करके धारण कर रहा है वह परमात्मा हैं यजुर्वेद में कहा गया है कि जो स्वयम्भू, सर्वव्यापक, षुद्ध, सनातन, निराकार परमेष वर है वह सनातन जीवरूप प्रजा के कल्याणार्थ यथावत् रीतिपूर्वक वेद द्वारा सब विद्याओं का उपदेष ा करता हैं

उपर्युक्त आधार पर यह पूर्णतः सिद्ध हो जाता है कि वेद परमात्मा प्रदत्त ज्ञान हैं परमात्मा से इतर वेद ज्ञान की प्राप्ति का स्रोत व साधन हो भी नहीं सकतां सृश्टि के आरम्भ में वेदों का प्रकाष ा होने पर यही ज्ञान सूर्य के प्रकाष ा की भांति सारे संसार में फैला और महाभारत काल के बाद यथावत् इसका प्रकाष ा व प्रचार न होने संसार में अज्ञान फैल गया क्योंकि संसार का नियम है कि विद्वान का पुत्र तभी विद्वान हो सकता है कि जब वह पुरूशार्थ व तप पूर्वक अध्ययन करता हैं यदि नहीं करता तो वह अज्ञानी रह जाता हैं यहां भी ऐसा ही हुआ कि महाभारत काल के बाद ऋशियों वा वेद के प्रचारकों की परम्परा टूट गई जिससे अज्ञान फैल गयां

वेदों का सबसे पहला महत्व तो यही है कि यह सृश्टि के आरम्भ में ईष वर से उत्पन्न ज्ञान है अतः इसकी प्रत्येक बात, षाब्द व वाक्य में निहित ज्ञान सत्य का दिग्दष ान कराता हैं इससे सभी भ्रमों का निवारण होता हैं संसार के किसी अन्य ग्रन्थ में यह विष ोशता नहीं हैं वेद के अतिरिक्त अन्य कोई ग्रन्थ पूरी तरह निर्भ्रान्त भी नहीं हैं यह भी जान लेते हैं कि मनुश्य के लिए संसार में ज्ञान से बढ़कर कुछ भी श्रेश्ठ व महत्वपूर्ण नहीं हैं अन्य सभी पदार्थ, धन व वैभव ज्ञान की दृश्टि से तुच्छ हैं इसी का बोध कराने के लिए ईष वर ने गायत्री मन्त्र में मनुश्यों को षि ाक्षा दी है कि तुम मुझसे अर्थात् ईष वर से ज्ञान की प्रार्थना करों ज्ञान मिल जाने से मनुश्य सभी पदार्थों को प्राप्त कर सकता है व निर्भ्रान्त हो सकता हैं

मनुश्य के सामने यह समस्या भी है कि वह संसार में मनुश्य जन्म के समय कहां से आया है और कालान्तर में मृत्यु होने पर कहां चला जाता हैं उसका मनुश्य जन्म लेने का कारण क्या है और उसके मनुश्य जीवन का उद्देष य व लक्ष्य क्या हैं? मनुश्य जीवन के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए उसके पास क्या क्या साधन हैं जिसका उपयोग कर वह लक्ष्य की प्राप्ति कर सकता हैं वेदों व वैदिक साहित्य यथा ब्राह्मण ग्रन्थों, उपनिशद, मनुस्मृति, दष ान आदि में मनुश्य जीवन का उद्देष य व लक्ष्य **'धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष'** की प्राप्ति को बताया गया हैं ईष वर का साक्षात्कार ही जीवन का लक्ष्य है जिसके प्राप्त कर लेने पर मोक्ष आदि की प्राप्ति मनुश्य अर्थात् स्त्री व पुरुशों को होती हैं यह भी चर्चा कर लेते हैं कि मुक्ति के लिए मनुश्य को अपना आचरण कैसा बनाना होता हैं वेदों व वेदानुसार षास्त्रों के आधार पर ऋशि दयानन्द ने कहा है कि परमेष वर की आज्ञा पालने, अधर्म, अविद्या, कुसंग, कुसंस्कार, बुरे व्यसनों से अलग रहने और सत्यभाशण, परोपकार, विद्या, पक्षपातरहित न्याय, धर्म की वृद्धि करने, (वैदिक विधि से) ईष वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना अर्थात् योगाभ्यास करने, विद्या पढ़ने, पढ़ाने और धर्म से पुरुशार्थ कर ज्ञान की उन्नति करने, सब से उत्तम साधनों का आचरण करने और जो कुछ करें वह सब पक्षपातरहित न्यायधर्मानुसार ही करें इत्यादि साधनों से मुक्ति होती हैं इनसे विपरीत ईष वर की आज्ञा भंग करने आदि कामों से जन्म व मरण रूपी बन्धन होता हैं वेदों का यह ज्ञान संसार में वैदिक

साहित्य से इतर किसी धर्म व मजहब की पुस्तक में नहीं मिलता और न उनके आचार्यों में इस पर प्रकाष ा ही डाला हैं

वेदों का अध्ययन करने से ईष् वर, जीव व सृश्टि का सत्य स्वरूप व ईष् वर की उपासना की सत्य विधि का ज्ञान होता है जिससे ईष् वर का साक्षात्कार और सभी दुःखों की निवृत्ति होती हैं इससे न केवल भौतिक सुख अपितु उससे भी कहीं अधिक ईष् वरीय आनन्द जिसे परमानन्द भी कह सकते हैं, ईष् वर के उपासक को प्राप्त होता हैं मनुश्य के समस्त कर्तव्यों का ज्ञान भी वेदों से ही होता हैं ईष् वर, माता–पिता, आचार्य व अन्य संबंधियों के प्रति व साथ ही पंच महायज्ञों जिसमें से एक देवयज्ञ वा अग्निहोत्र है, उन सबका ज्ञान भी वेद एवं वैदिक साहित्य से होता हैं वेद का महत्व यह भी कि यह साम्प्रदायिक विचारों से सर्वथा मुक्त है और संसार के सभी लोगों को एक सर्वव्यापक ईष् वर का पुत्र व पुत्री बताते हैं चारों वेद अहिंसा की षि ाक्षा देते हैं और मांसाहार का हर प्रकार से निशेध करते व उसे दण्डनीय घोशित करते हैं वेद प्राणी मात्र के प्रति दया व प्रेम की षि ाक्षा देते हैं वेदों में संसार की सभी विद्यायें बीज रूप में हैं महाभारत काल तक भारत सभी विद्याओं में अग्रणीय थां भाशा की बात करें तो संसार की श्रेश्ठतम् संस्कृत भाशा का प्रयोग भारत के वासी ही करते थें पदार्थ विद्या में भी इस देष ा विद्वान सिद्ध व विज्ञ थें वायुयान व जलयान सभी यहां थें स्वर्ण का भण्डार थां सभी स्वर्णाभूशण धारण करते थें महाभारत व रामायण के सूक्ष्म वर्णन करने पर इन तथ्यों का साक्षात् किया जा सकता हैं ऐसे ही अनेक तथ्यों का उल्लेख सत्यार्थप्रकाष ा, ऋग्वेदादिभाश्यभूमिका और ऋशि दयानन्द के पूना प्रवचनों में अनेक स्थानों पर हुआ हैं

वेदों की परम्परा को 1,96,08,53,117 वर्श हुए हैं जबकि पारसी, बौद्ध, जैन, यहूदी, ईसाई व इस्लाम को मात्र 1500 से लेकर 4000 वर्श ही हुए हैं वेदों का महत्व इससे भी विदित हो जाता हैं वेद ईष् वरीय ज्ञान होने से इसका महत्व सूर्य व समुद्र के समान विष ाल, महान व अनन्त ईष् वर के समान अनन्त हैं हमने अपनी अल्प बुद्धि से कुछ थोड़ी सी बातें इस लेख के आकार की दृश्टि करने का प्रयास किया हैं आर्य विद्वानों की इस विशय की पुस्तकों में विस्तार से प्रकाष ा डाला गया हैं समस्त प्राचीन वैदिक साहित्य, सत्यार्थप्रकाष ा एवं ऋग्वेदादिभाश्यभूमिका सहित ऋशि दयानन्द और आर्य विद्वानों के वेदभाश्यों से भी वेदों का महत्व का अनुमान लगाया जा सकता है जो कि संसार के समस्त ग्रन्थों में सर्वाधिक हैं इसी के साथ इस लेख को विराम देते हैं ओ३म् षाम्

ंमनमोहन कुमार आर्य
पताः 196 चुक्खूवाला–2
देहरादून–248001
फोनः09412985121